निबंधन संख्या पी0टी0-40

सत्यमेव जयते

बिहार गजट
असाधारण अंक
बिहार सरकार द्वारा प्रकाशित

27 आषाढ़ 1935 (श0)

(सं0 पटना 573)   पटना, वृहस्पतिवार, 18 जुलाई 2013

सं0 07/सू० प्रा०–19/2013—877

सूचना प्रावैधिकी विभाग

———————

संकल्प

17 जुलाई 2013

विषयः– **बिहार में कम्प्यूटरीकरण के प्रथम चरण के उपरान्त Big Data Analytics हेतु किये जाने वाले प्रयास के संबंध में।**

प्रभावशाली ई.–गवर्नेंस के लिए कम्प्यूटरीकरण एक सतत् चलने वाली विकासात्मक प्रक्रिया है। बिहार में पहले ही विकास, प्रशासन, विधि–व्यवस्था, कर व्यवस्था आदि क्षेत्रों में कम्प्यूटरीकरण प्रारम्भ है। इन प्रक्रियाओं में आँकड़ों के संग्रहण जैसी महत्वपूर्ण प्रक्रिया सही मायने में प्रारम्भ हो चुकी है। लेकिन इन सबके बावजूद तुलनात्मक दृष्टि से बिहार में कम्प्यूटरीकरण की प्रक्रिया अभी भी शुरूआती दौर में ही है। कम्प्यूटराईजेशन का सभी क्षेत्रों में वास्तविक लाभ तभी दृष्टिगोचर होगा, जब विभिन्न स्त्रोतों से आँकड़े प्रचुर मात्रा में प्राप्त होने लगेंगे, जिससे न केवल उनके अन्तः संबंध एवं अन्तर्विरोध को समझा जा सकेगा बल्कि इनके आधार पर नई परिस्थितियों में उभरने वाले प्रतिक्रियात्मक व्यवहारों एवं नतीजों का भी पूर्वानुमान लगाया जा सकेगा। अतः कम्प्यूटराईजेशन का अगला चरण विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त किये गये बड़े आँकड़ों के सूक्ष्म एवं वैज्ञानिक विश्लेषण से संबंधित होनी चाहिए। कम्प्यूटराईजेशन से प्राप्त होने वाले वास्तविक लाभ इन्हीं प्रक्रियाओं के दौरान परिलक्षित होने प्रारम्भ हो जायेंगे। बड़े आँकड़ों का सूक्ष्म एवं वैज्ञानिक विश्लेषण से वैसे तथ्यों को भी परख पाना सम्भव हो सकेगा जो सामान्यतः मानवीय सीमित क्षमता के वश में न हो। उदाहरणतः ड्राईवर की नैसर्गिक क्षमता, पूर्व आचार–व्यवहार, तनाव स्तर, माहौल, वातावरण, रोड़ की स्थिति, वाहन प्रकार, ट्रैफिक स्थिति, ड्राईविंग संबंधी आदत, अल्कोहल पीने की आदत, मेडिकल रिपोर्टस आदि यदि सम्यक् तरीके से अध्ययन किये जायें और उनके अन्तः संबंध का विश्लेषण किया जाय तो एक ऐसा मॉडल तैयार किया जा सकता है, जिससे यह पता चल सके कि एक खास प्रकार का ड्राईवर किसी खास समय में किस तरह रोड़ दुर्घटनाओं को अंजाम दे सकता है। ऐसा पूर्वानुमान बड़े आँकड़ों के सम्यक् सूक्ष्म एवं वैज्ञानिक विश्लेषण से ही सम्भव है। इतना ही नहीं, किसी संदेह के दायरे वाले आतंकवादी, अपराधिक तत्व के कॉल डिटेल्स, आवाज ग्रहण, पैसे की निकासी संबंधी विवरण, उनकी आवाजाही या उनके द्वारा अपनाये जाने वाले अन्य तौर–तरीके आदि के सूक्ष्म सम्यक् एवं वैज्ञानिक विश्लेषण से वैसे स्थल जहाँ पर अपराधिक आक्रमण नियोजित किये जा सकते हों, का पूर्वानुमान आसानी से लगाया जा सकता है। इससे कानून–व्यवस्था लागू करने वाले एजेंसीज को चुनौतियों के सामना करने में महत्वपूर्ण मदद मिल सकती है। मौसम भविष्यवाणी और जटिल प्रणालियों का निराकरण आदि ऐसे अन्य उदाहरण हो सकते हैं।

2. कम्पयूटराईजेशन के दूसरे चरण की शुरूआत निमित्त हमारा प्रथम प्रयास यह होगा कि हम यह सुनिश्चित करें कि हमें किस प्रकार के पूर्वानुमानों या भविष्यवाणियों की आवश्यकता है। आँकड़ों की उपलब्धता और उनके अन्तः संबंधों की उपलब्धता से वैसे छिपे हुए रहस्य भी सामने आ सकते हैं, जो सामान्य–जन के लिए कल्पनातीत हैं। इसके निमित्त मूलभूत आँकड़ों में वैसे तत्व अवश्य होने चाहिए, जो सामान्य विज्ञता एवं प्रबुद्धता की दृष्टि से किसी खास जानकारी एवं पूर्वानुमान के लिए आवश्यक हो। अगली प्रक्रिया यह होनी चाहिए कि प्राप्त बड़े आँकड़े में से बेकार एवं अमहत्वपूर्ण आँकड़ों को हटाया जाय, उन्हें सिलसिलेवार ढ़ंग से रखा जाय और एक खास प्रारूप में वैज्ञानिक विश्लेषण के लिए उपलब्ध कराया जाय। बड़े आँकड़ों की गुणवत्ता की दृष्टि से धारदार बनाने के लिए बहुस्तरीय स्तर पर आपसी अन्तः संबंध को स्थापित करते हुए एक ऐसे Predictive Mathematical Model के रूप में तैयार करना चाहिए, जिससे सूक्ष्म, सटीक एवं विश्वासजनक परिणाम सामने आ सके।

3. यदि बिहार सरकार को विभिन्न विभागों द्वारा उपलब्ध तरह–तरह के आँकड़ों को सूक्ष्म, सम्यक् एवं वैज्ञानिक तरीके से विश्लेषित किया जाता है और उनके अन्तः संबंधों को समझा जाता है तो सामान्य–जन के स्पंदन को अनुभूत किया जा सकेगा एवं तदैव आवश्यक कदम उठाकर ई.–गवर्नेंस के माध्यम से जनता की वास्तविक सेवा की जा सकेगी। ऐसे स्थिति प्राप्त करने के लिए राज्य सरकार के विभागों के अन्दर और परस्पर विभागों के अंदर भी ऐसे आवश्यक प्रयास एवं तद्नुरूप विचारण करने पड़ेगें, ताकि यह सुस्पष्ट हो सके कि उन्हें क्या जरूरत है और बड़े आँकड़ों के सूक्ष्म, सम्यक् एवं वैज्ञानिक परीक्षण से उनकी क्या अपेक्षायें हैं। इस क्रम में लागत, समय–सीमा, आँकड़ा संग्रहण के तरीके आदि पर भी विचार किया जाना श्रेयस्कर होगा। सोच–विचार की यह प्रक्रिया संस्थानिक प्रारूप में करनी होगी ताकि इस दिशा में किये जाने वाले प्रयास सफलीभूत हों और वे मानवीय विकारों से मुक्त एवं स्वतंत्र हो। इस परिपेक्ष्य में बिहार सरकार के कई विभागों के कई प्रधान सचिव एवं सचिवों के साथ दो बैठकें की जा चुकी हैं, जिनमें कुछ विभागों द्वारा विशेष अभिरूचि प्रदर्शित की गई है। हालाँकि इस प्रयास में अन्य विभागों की सक्रियता और संस्थानिक सलाह–प्रणाली की आवश्यकता है, ताकि कालान्तर में इस प्रोजेक्ट के सफल क्रियान्वयन के लिए एक समर्पित इकाई की स्थापना हो सके, जो पूर्व उल्लिखित उद्देश्यों की पूर्त्ति कर सके।

4. इस महत्ती प्रयास के शुरूआती दौर में सूचना प्रावैधिकी विभाग को वांछित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए बिहार सरकार के अन्य विभागों के साथ विचार–विमर्श के पश्चात् एक प्रणाली विकसित करने निमित्त प्राधिकृत किया गया है। सूचना प्रावैधिकी विभाग, मंत्रिपरिषद् को इस क्षेत्र में हो रही प्रगति से अवगत करवाता रहेगा। इस विभाग को अन्य विभागों के प्रधान सचिव, सचिव एवं तकनीकी विशेषज्ञों के साथ बैठक करने हेतु निमित्त प्राधिकृत किया गया है। इस प्रोजेक्ट पर होने वाले व्यय का आंकलन, डी० पी० आर० आदि जैसे ही तैयार हो जायेंगे, मंत्रिपरिषद् को संसूचित किये जायेंगे।

आदेशः–*आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को राजकीय राजपत्र के असाधारण अंक में प्रकाशित किया जाय और इसकी प्रति सभी विभाग/विभागाध्यक्ष/प्रमंडलीय आयुक्त/जिलाधिकारी/अनुमंडलाधिकारी को सूचना एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु भेजी जाय।*

नोट :–बिहार में कम्प्यूटरीकरण के प्रथम चरण के उपरान्त ***Big Data Analytics*** *हेतु किये जाने वाले प्रयास के संकल्प को इन्टरनेट पर बेवसाईट* ***http://gov.bih.nic.in*** *एवं* ***www.biharonline.gov.in*** *के माध्यम से डाउन लोड किया जा सकता है।*

बिहार–राज्यपाल के आदेश से,
नरेन्द्र कुमार सिन्हा,
सरकार के प्रधान सचिव।

अधीक्षक, सचिवालय मुद्रणालय,
बिहार, पटना द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित।
बिहार गजट (असाधारण) 573-571+500-डी0टी0पी0।
Website: http://egazette.bih.nic.in